# परिचय
## [INTRODUCTION]

### स्मरणीय बिन्दु
### (POINTS TO REMEMBER)

1. **आर्थिक क्रिया** (Economic Activity)– उस क्रिया को आर्थिक क्रिया कहते हैं जिसका सम्बन्ध मानवीय आवश्यकताओं को संतुष्ट करने के लिए सीमित साधनों के उपयोग से होता है।
   **ध्यान दें :** आय का सृजन करने वाली सभी क्रियाएँ आर्थिक क्रियाएँ हैं, किन्तु सभी आर्थिक क्रियाएँ आवश्यक रूप से आय सृजित करने वाली क्रियाएँ नहीं होतीं।
2. **आर्थिक क्रिया के प्रकार** (Kinds of Economic Activity)—
   (i) उत्पादन, (ii) उपभोग, (iii) विनिमय–(a) वस्तु कीमत निर्धारण तथा (b) साधन कीमत निर्धारण, (iv) निवेश।
3. **उत्पादन के एजेण्ट** (Agents of Production)—
   (i) भूमि, (ii) श्रम, (iii) पूँजी, (iv) संगठन, (v) उद्यमिता (साहस)।
4. **व्यष्टि (सूक्ष्म) अर्थशास्त्र** (Micro Economics)– व्यष्टि (सूक्ष्म) अर्थशास्त्र में केवल एक व्यक्तिगत इकाई की आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन किया जाता है। उदाहरण के लिए, एक उपभोक्ता का व्यवहार, एक उत्पादक अथवा फर्म द्वारा उत्पादन क्रिया आदि अनेक ऐसी आर्थिक क्रियाएँ हैं, जो व्यक्तिगत आर्थिक इकाई से सम्बन्धित हैं जिनका अध्ययन व्यष्टि अर्थशास्त्र में किया जाता है।
   **परिभाषा** (Definition)– **बोल्डिंग** के शब्दों में, "सूक्ष्म अर्थशास्त्र आर्थिक विश्लेषणों की वह शाखा है जो व्यक्तिगत इकाई के आर्थिक व्यवहार का अध्ययन है, न कि इकाइयों के समूह का।"
5. **व्यष्टि (सूक्ष्म) अर्थशास्त्र की शाखाएँ** (Branches of Micro Economics) (*USEB*, 2017)

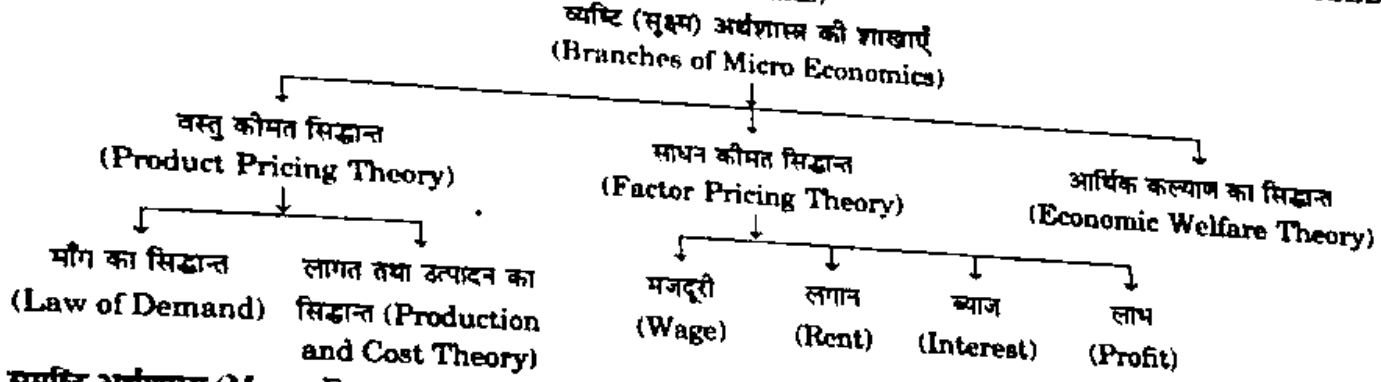

   **व्यष्टि (सूक्ष्म) अर्थशास्त्र की शाखाएँ (Branches of Micro Economics)**
   - वस्तु कीमत सिद्धान्त (Product Pricing Theory)
     - माँग का सिद्धान्त (Law of Demand)
     - लागत तथा उत्पादन का सिद्धान्त (Production and Cost Theory)
   - साधन कीमत सिद्धान्त (Factor Pricing Theory)
     - मजदूरी (Wage)
     - लगान (Rent)
     - ब्याज (Interest)
     - लाभ (Profit)
   - आर्थिक कल्याण का सिद्धान्त (Economic Welfare Theory)
6. **समष्टि अर्थशास्त्र** (Macro Economics)– समष्टि अर्थशास्त्र सम्पूर्ण अर्थव्यवस्था के स्तर पर आर्थिक क्रियाओं का अध्ययन करता है। उदाहरण के लिए, समष्टि अर्थशास्त्र में राष्ट्रीय आय, राष्ट्रीय बचत, राष्ट्रीय विनियोग, कुल रोजगार, कुल उत्पादन, सामान्य कीमत स्तर आदि का अध्ययन किया जाता है।
   **परिभाषा** (Definition)– **प्रो. बोल्डिंग** के अनुसार, "व्यापक अर्थशास्त्र व्यक्तिगत मात्राओं का अध्ययन नहीं करता बल्कि इन मात्राओं के समूह का अध्ययन करता है, व्यक्तिगत आयों का नहीं अपितु राष्ट्रीय आय का; व्यक्तिगत कीमतों का नहीं बल्कि सामान्य कीमत स्तर का; व्यक्तिगत उत्पादन का नहीं बल्कि राष्ट्रीय उत्पादन का।"
7. **आर्थिक समस्या** (Economic Problem)– विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति करने के लिए सीमित साधनों के प्रयोग से उत्पन्न चयन की समस्या को ही आर्थिक समस्या कहते हैं।
8. **आर्थिक समस्या क्यों उत्पन्न होती है?** (Why does an Economic Problem arises ?)
   (i) असीमित आवश्यकताएँ (Unlimited Wants)।
   (ii) आवश्यकताओं की तीव्रता में अन्तर (Difference in Wants)।
   (iii) आवश्यकताओं की पूर्ति के साधन (Means) सीमित (Scarce) हैं।
   (iv) साधनों का वैकल्पिक प्रयोग (Alternative Uses of Resources)।
   (v) चयन के चुनाव की समस्या (Problem of Choice)।
9. **अर्थव्यवस्था की केन्द्रीय समस्याएँ** (Central Problems of an Economy)
   (i) क्या और कितनी मात्रा में उत्पादन किया जाए ?

Scanned with CamScanner

(ii) कैसे उत्पादन किया जाए?

(iii) किसके लिए उत्पादन किया जाए?

(iv) साधनों के कुशलतम उपयोग की समस्या,

(v) साधनों के विकास की समस्या।

**10. उत्पादन सम्भावना वक्र (Production Possibility Curve)**

यह वक्र दो वस्तुओं के सम्भावित संयोगों को प्रकट करता है। यह दो मुख्य मान्यताओं पर आधारित है–

(i) स्थिर तकनीकी, (ii) स्थिर साधन।

**11. उत्पादन सम्भावना वक्र की विशेषताएँ (Characteristics of Production Possibility Curve)**

(i) बाएँ से दाएँ नीचे की ओर झुकती है।

(ii) उत्पादन सम्भावना वक्र मूल बिन्दु के प्रति नतोदर (Concave to the origin) होता है।

**12. उत्पादन सम्भावना वक्र का खिसकना (Shift in Production Possibility Curve)–**

(i) साधनों में परिवर्तन, (ii) तकनीक में परिवर्तन।

**13. उत्पादन सम्भावना वक्र द्वारा केन्द्रीय समस्याओं का विश्लेषण (Analysis of Central Problems by Production Possibility Curve)**

(i) उत्पादन सम्भावना वक्र पर कोई भी बिन्दु यह प्रकट करता है कि वस्तु X तथा वस्तु Y की कितनी मात्रा का उत्पादन किया जा रहा है।

(ii) उत्पादन सम्भावना वक्र के नीचे स्थित कोई बिन्दु साधनों के अपूर्ण उपयोग को दर्शाता है।

(iii) उत्पादन सम्भावना वक्र का दाईं ओर खिसकना आर्थिक विकास को व्यक्त करता है।

**14. अवसर लागत (Opportunity Cost)**–किसी साधन की अवसर लागत से अभिप्राय उसके दूसरे सर्वश्रेष्ठ वैकल्पिक मूल्य से है। *(JAC, 2017)*

**15. सीमान्त अवसर लागत (Marginal Opportunity Cost)**–एक वस्तु की सीमान्त अवसर लागत किसी दूसरी वस्तु की वह मात्रा है जिसे पहली वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई का उत्पादन करने के लिए छोड़ना पड़ता है।

**16. उत्पादन सम्भावना वक्र का ढलान सीमान्त अवसर लागत को दर्शाता है (Slope of PPC shows Marginal Opportunity Cost)**–उत्पादन सम्भावना वक्र का ढलान बढ़ता है। (क्योंकि उत्पादन सम्भावना वक्र मूल बिन्दु की ओर नतोदर है)। इसी कारण, जब साधनों को एक उपयोग से हटाकर दूसरे उपयोग में लगाया जाता है तो सीमान्त अवसर लागत में बढ़ने की प्रवृत्ति पाई जाती है।

**17. उत्पादन सम्भावना वक्र की आकृति (Shape of PPC)**–उत्पादन सम्भावना वक्र मूल बिन्दु की ओर नतोदर है क्योंकि जब साधनों को एक उपयोग से हटाकर दूसरे उपयोग में लगाया जाता है तो सीमान्त अवसर लागत में बढ़ने की प्रवृत्ति पाई जाती है।

Scanned with CamScanner

# उपभोक्ता व्यवहार एवं माँग
## [CONSUMER BEHAVIOUR AND DEMAND]

### स्मरणीय बिन्दु (POINTS TO REMEMBER)

1. **सम-सीमान्त उपयोगिता नियम** (Law of Equi-marginal Utility)—यह नियम यह बताता है कि जब सब वस्तुओं की सीमान्त उपयोगिताओं और उनकी कीमतों का अनुपात बराबर होता है, तब एक उपभोक्ता को अधिकतम सन्तुष्टि मिलती है।

2. **एक वस्तु के लिए उपभोक्ता सन्तुलन** (Consumer's Equilibrium for Single Commodity)—उपभोक्ता सन्तुलन (अधिकतम सन्तुष्टि) की स्थिति तब प्राप्त करता है, जब प्रति रुपया सन्तुष्टि $\left(\frac{MU_x}{P_x}\right)$ मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता ($MU_m$) के बराबर हो जाती है अर्थात्

$$\frac{MU_x}{P_x} = MU_m$$

3. **कई वस्तुओं के लिए उपभोक्ता सन्तुलन** (Consumer's Equilibrium for Many Commodities)—उपभोक्ता सन्तुलन की स्थिति तब प्राप्त करता है, जब प्रत्येक वस्तु की प्रति रुपया सन्तुष्टि $\left(\frac{MU_x}{P_x}\right)$ मुद्रा की सीमान्त उपयोगिता ($MU_m$) के बराबर हो जाती है, जैसे—

$$\frac{MU_1}{P_1} = \frac{MU_2}{P_2} = \frac{MU_3}{P_3} = \ldots = \frac{MU_n}{P_n} = MU_m$$

4. **उदासीनता वक्र** (Indifference Curve)—यह दो वस्तुओं के ऐसे विभिन्न संयोगों का बिन्दुपथ होता है जो उपभोक्ता को समान सन्तुष्टि देते हैं। **उदासीनता मानचित्र** (Indifference Map)—एक उपभोक्ता के सन्तुष्टि के विभिन्न स्तरों को दर्शाने वाले उदासीनता वक्रों का समूह उदासीनता मानचित्र कहलाता है।

5. **सीमान्त प्रतिस्थापन दर** (Marginal Rate of Substitution)—किसी वस्तु की एक अतिरिक्त इकाई प्राप्त करने के लिए उपभोक्ता दूसरी वस्तु की जितनी इकाइयों को छोड़ता है, उसे सीमान्त प्रतिस्थापन दर कहते हैं।

$$MRS_{xy} = -\frac{\Delta Y}{\Delta X}$$

6. **माँग** (Demand)—एक निश्चित कीमत पर एक उपभोक्ता किसी वस्तु की जितनी मात्रा खरीदने को इच्छुक और योग्य होता है, उसे माँग कहते हैं। माँग में निम्न पाँच तत्वों का निहित होना आवश्यक होता है—
(1) वस्तु की इच्छा। (2) वस्तु क्रय के लिए पर्याप्त साधन। (3) साधन व्यय करने की तत्परता।
(4) एक निश्चित कीमत। (5) एक निश्चित समयावधि।

7. **माँगी गई मात्रा** (Quantity Demanded)—माँगी गई मात्रा से अभिप्राय उस विशेष मात्रा से है जो एक उपभोक्ता, एक निश्चित समय पर, एक कीमत विशेष पर खरीदने को इच्छुक और योग्य होता है।

8. **माँग फलन** (Demand Function)—यह किसी वस्तु के लिए माँग (प्रभाव) तथा इसके विभिन्न निर्धारक तत्वों (कारण) के बीच कार्यात्मक सम्बन्ध (या कारण तथा प्रभाव सम्बन्ध) को व्यक्त करता है। इसे निम्न प्रकार से व्यक्त किया जाता है—

$$D_x = f(P_x, P_1 \ldots P_{n-1}, Y, T, E)$$

$D_x$ = X-वस्तु की माँग
$P_x$ = X-वस्तु की कीमत
$P_1, \ldots P_{n-1}$ = सम्बन्धित वस्तु की कीमतें
$Y$ = उपभोक्ता की आय
$T$ = उपभोक्ता की रुचियाँ
$E$ = उपभोक्ता की आशाएँ

9. **माँग तालिका** (Demand Schedule)—यह तालिका जिसमें कीमत और खरीदी गई मात्रा के बीच के सम्बन्ध को प्रकट किया जाता है, माँग तालिका कहलाती है।

10. **व्यक्तिगत माँग तालिका** (Individual Demand Schedule)—व्यक्तिगत माँग तालिका वह तालिका है जो किसी निश्चित समय पर, एक व्यक्ति द्वारा किसी वस्तु की विभिन्न कीमतों पर उसकी माँग की मात्राओं को दर्शाती है।

11. **बाजार माँग तालिका** (Market Demand Schedule)—बाजार माँग तालिका समस्त बाजार में किसी समय बिन्दु पर विभिन्न कीमतों पर वस्तु की माँग को प्रदर्शित करती है। इस प्रकार बाजार माँग तालिका एक वस्तु के लिए कुल उपभोक्ताओं की माँग का योग है।

12. **माँग वक्र** (Demand Curve)—माँग तालिका को जब रेखाचित्र के रूप में प्रदर्शित कर दिया जाता है, तब उसे माँग वक्र कहते हैं।

Scanned with CamScanner

13. **व्यक्तिगत माँग वक्र (Individual Demand Curve)**—व्यक्तिगत माँग वक्र वह वक्र है जो किसी वस्तु की विभिन्न कीमतों पर एक उपभोक्ता द्वारा उस वस्तु की माँगी गई मात्राओं को प्रकट करती है।

14. **बाजार माँग वक्र (Market Demand Curve)**—बाजार माँग वक्र वह वक्र है जो किसी वस्तु को विभिन्न कीमतों पर बाजार के सभी उपभोक्ताओं द्वारा माँगी गई मात्राओं को प्रकट करता है। बाजार माँग वक्र व्यक्तिगत माँग वक्रों का क्षैतिज योग (Horizontal Summation) होता है। *(CBSE, 2013)*

15. **माँग का नियम (Law of Demand)**—माँग का नियम वस्तु की कीमत तथा इसकी माँगी गई मात्रा के बीच विपरीत सम्बन्ध को व्यक्त करता है। इसका अर्थ है कि अन्य बातें समान रहने पर, किसी वस्तु की कीमत के बढ़ने पर उसकी माँग घटती तथा घटने पर माँग बढ़ती है।

$$P \propto \frac{1}{Q}$$

16. **माँग वक्र का ढलान ऋणात्मक क्यों होता है? (Why does Demand Curve Slope Downwards ?)**—माँग वक्र के ऋणात्मक ढलान अथवा माँग के नियम के लागू होने के कई कारण हैं, जैसे—(i) घटती सीमान्त उपयोगिता का नियम, (ii) आय प्रभाव, (iii) प्रतिस्थापन प्रभाव, (iv) उपभोक्ता की संख्या में परिवर्तन।

17. **माँग के नियम के अपवाद (Exceptions to the Law of Demand)**—माँग का नियम निम्नलिखित स्थिति में लागू होता है—(i) भविष्य में कीमत वृद्धि की सम्भावना, (ii) प्रतिष्ठासूचक वस्तुएँ, (iii) उपभोक्ता की अज्ञानता, (iv) गिफिन का विरोधाभास।

18. **आय माँग (Income Demand)**—आय माँग का अर्थ वस्तुओं और सेवाओं की उन मात्राओं से लगाया जाता है जो अन्य बातों के समान रहने की दशा में उपभोक्ता दी गई समयावधि में अपने आय के विभिन्न स्तरों पर खरीदने की क्षमता रखता है।

19. **सामान्य वस्तुएँ (Normal Goods)**—सामान्य वस्तुएँ ऐसी वस्तुएँ हैं जिनका आय प्रभाव धनात्मक तथा कीमत प्रभाव ऋणात्मक होता है।

20. **निम्नकोटि वस्तुएँ (Inferior Goods)**—निम्नकोटि वस्तुएँ ऐसी वस्तुएँ हैं जिनका आय प्रभाव ऋणात्मक होता है।

21. **गिफिन वस्तुएँ (Giffin Goods)**—गिफिन वस्तुएँ ऐसी निम्नकोटि की वस्तुएँ हैं जिनका आय प्रभाव ऋणात्मक होता है तथा कीमत प्रभाव धनात्मक होता है। गिफिन वस्तु पर माँग का नियम लागू नहीं होता।

22. **सम्बन्धित वस्तुएँ (Related Goods)**—वस्तुएँ तब सम्बन्धित होती हैं जब (a) एक वस्तु (X) की कीमत दूसरी वस्तु (Y) की माँग को प्रभावित करती है अथवा (b) एक वस्तु की माँग दूसरी वस्तु की माँग में वृद्धि या कमी लाती है। सम्बन्धित वस्तुओं को निम्न प्रकार से वर्गीकृत किया जाता है—(i) स्थानापन्न वस्तुएँ तथा (ii) पूरक वस्तुएँ।

उदाहरण—कार और पेट्रोल सम्बन्धित तथा पूरक वस्तुएँ हैं। चाय और कॉफी सम्बन्धित तथा स्थानापन्न वस्तुएँ हैं।

23. **स्थानापन्न वस्तुएँ (Substitutes Goods)**—स्थानापन्न वस्तुएँ वे सम्बन्धित वस्तुएँ हैं जो एक-दूसरे के बदले एक ही उद्देश्य के लिए प्रयोग की जा सकती हैं। उदाहरण के लिए, पेप्सी कोला और कोका कोला। स्थानापन्न वस्तुओं में से एक वस्तु की माँग तथा दूसरी वस्तु की कीमत में धनात्मक सम्बन्ध होता है अर्थात् एक वस्तु की कीमत बढ़ने पर उसकी स्थानापन्न वस्तु की माँग बढ़ती है तथा कीमत कम होने पर माँग कम होती है।

24. **पूरक वस्तुएँ (Complementary Goods)**—पूरक वस्तुएँ वे वस्तुएँ हैं जो किसी आवश्यकता को संयुक्त रूप से सन्तुष्ट करती हैं, जैसे—पेन और स्याही। अन्य शब्दों में, पूरक वस्तुएँ ऐसी वस्तुएँ हैं जिनमें एक वस्तु की माँग तथा दूसरी वस्तु की कीमत में ऋणात्मक सम्बन्ध होता है अर्थात् एक वस्तु की कीमत बढ़ने पर उसकी पूरक वस्तु की माँग कम हो जायेगी तथा कीमत कम होने पर पूरक वस्तु की माँग बढ़ जायेगी।

25. **आड़ी माँग (Cross Demand)**—अन्य बातों के समान रहने पर वस्तु X की कीमत में परिवर्तन होने से उसके सापेक्ष सम्बन्धित वस्तु Y की माँग में जो परिवर्तन होता है, उसे आड़ी माँग कहते हैं।

26. **संयुक्त माँग (Joint Demand)**—जब एक ही उद्देश्य की पूर्ति के लिए एक ही समय पर एक से अधिक वस्तुओं की माँग एक साथ की जाती है, तब ऐसी माँग को संयुक्त माँग कहा जाता है, जैसे—गेंद-बल्ला, स्कूटर-पेट्रोल।

27. **व्युत्पन्न माँग (Derived Demand)**—जब एक वस्तु की माँग से दूसरी वस्तु की माँग स्वतः उत्पन्न हो जाती है, तब ऐसी माँग को व्युत्पन्न माँग कहते हैं। उत्पत्ति के साधनों की माँग व्युत्पन्न माँग होती है।

28. **माँग वक्र पर संचलन (Movement Along the Demand Curve)**—जब केवल किसी वस्तु की कीमत में परिवर्तन होने पर उसकी माँग में परिवर्तन होता है तो इसे एक ही माँग वक्र के विभिन्न बिन्दुओं द्वारा प्रकट किया जाता है। इसे माँग वक्र पर संचलन या वस्तु की मात्रा में परिवर्तन भी कहा जाता है। माँग वक्र पर संचलन 'माँग का विस्तार' एवं 'माँग का संकुचन' की दशाओं को बताता है। इन दोनों ही दशाओं में माँग वक्र नहीं बदलता।

29. **माँग का विस्तार (Extension of Demand)**—अन्य बातें समान रहने पर, जब किसी वस्तु की कीमत में कमी होने के फलस्वरूप उसकी माँग अधिक हो जाती है तो इसे माँग में विस्तार कहा जाता है। एक माँग वक्र के ऊपर के बिन्दु से नीचे के बिन्दु की ओर संचलन माँग का विस्तार कहलाता है।

30. **माँग का संकुचन (Contraction of Demand)**—अन्य बातें समान रहने पर, जब किसी वस्तु की कीमत में वृद्धि होने के कारण उसकी माँग कम हो जाती है तो माँग में होने वाली कमी को माँग का संकुचन कहते हैं। एक माँग वक्र के नीचे के बिन्दु से ऊपर के बिन्दु की ओर संचलन माँग वक्र का संकुचन कहलाता है।

31. **माँग वक्र का खिसकाव (Shifting of the Demand Curve)**—माँग वक्र के खिसकाव से अभिप्राय है कि माँग वक्र प्रारम्भिक माँग वक्र के ऊपर या नीचे सरक जाती है। इस प्रकार का परिवर्तन तब आता है जब कीमत के अतिरिक्त दूसरे तत्वों जैसे आय, फैशन आदि में परिवर्तन होने से माँग कम या अधिक हो जाती है। माँग वक्र का खिसकाव 'माँग में वृद्धि' एवं 'माँग में कमी' की दशाओं को बताता है। इन दोनों दशाओं में माँग वक्र बदल जाता है।

32. **माँग में वृद्धि (Increase in Demand)**—जब कीमत के अतिरिक्त अन्य निर्धारक तत्वों में परिवर्तन होने के कारण वस्तु की माँग बढ़ जाती है तो इसे माँग में वृद्धि कहते हैं। यह माँग वक्र को ऊपर की ओर खिसकाव द्वारा प्रकट होती है। *(CBSE, 2013)*

33. **माँग में वृद्धि के कारण (Causes of Increase in Demand)**—माँग में वृद्धि के मुख्य कारण निम्नलिखित हैं—(i) उपभोक्ता की आय में वृद्धि, (ii) प्रतिस्थापन वस्तु की कीमत में वृद्धि, (iii) पूरक वस्तु की कीमत में कमी, (iv) वस्तु के लिए उपभोक्ता की रुचि तथा प्राथमिकता में वृद्धि, (v) क्रेताओं की संख्या में वृद्धि, (vi) कीमत बढ़ने की सम्भावना, (vii) भविष्य में उपभोक्ता की आय बढ़ने की सम्भावना।

Scanned with CamScanner

**34. माँग में कमी (Decrease in Demand)**– जब कीमत के अतिरिक्त अन्य निर्धारक तत्वों में परिवर्तन होने के कारण, वस्तु की माँग घट जाती है तो इसे माँग में कमी कहते हैं। यह माँग वक्र की ऊपर की ओर खिसकाव द्वारा प्रकट होती है।

**35. माँग में कमी के कारण (Causes of Decrease in Demand)**–माँग में कमी के मुख्य कारण निम्नलिखित है–(i) उपभोक्ता की आय में कमी, (ii) प्रतिस्थापन वस्तु की कीमत में कमी, (iii) पूरक वस्तु की कीमत में कमी, (iv) वस्तु के लिए उपभोक्ता की रुचि तथा प्राथमिकता की कमी, (v) क्रेताओं की संख्या में कमी, (vi) कीमत कम होने की सम्भावना, (vii) भविष्य में उपभोक्ता की आय कम होने की सम्भावना।

**36. माँग के नियम एवं माँग की लोच में अन्तर (Difference between Law of Demand and Elasticity of Demand)**–माँग का नियम एक गुणात्मक कथन (Qualitative Statement) है जो वस्तु की कीमत में परिवर्तन होने पर माँग में होने वाले परिवर्तन की दिशा का बोध कराता है। जबकि माँग की लोच एक परिमाणात्मक कथन (Quantitative Statement) है जो माँग में होने वाले परिवर्तन की मात्रात्मक माप प्रस्तुत करता है।

**37. माँग की कीमत लोच (Price Elasticity of Demand)**–माँग की कीमत लोच कीमत में होने वाले आनुपातिक परिवर्तन तथा माँग में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन का अनुपात है।

$$e_d = \frac{\text{माँग में आनुपातिक परिवर्तन}}{\text{कीमत में आनुपातिक परिवर्तन}}$$

**38. माँग की कीमत लोच की श्रेणियाँ (Degrees of Price Elasticity of Demand)**–(i) पूर्णतया लोचदार ($e = \infty$), (ii) पूर्णतया बेलोचदार ($e = 0$), (iii) इकाई लोचदार ($e = 1$), (iv) इकाई से अधिक लोचदार अथवा लोचदार ($e > 1$), (5) इकाई से कम लोचदार अथवा बेलोचदार ($e < 1$)।

**(i) पूर्णतया लोचदार माँग (Perfectly Elasticity Demand)** ($e = \infty$)–पूर्णतया लोचदार माँग उसे कहते हैं जिसमें कीमत में थोड़ा-सा परिवर्तन होने पर माँग में अनन्त परिवर्तन हो जाता है। ऐसा माँग वक्र X-अक्ष के समानान्तर होता है।

**(ii) पूर्णतया बेलोचदार माँग (Perfectly Inelastic Demand)** ($e = 0$)–जब कीमत में परिवर्तन के फलस्वरूप माँग में कोई परिवर्तन नहीं होता तो इसे पूर्णतया बेलोचदार माँग कहते हैं। ऐसा माँग वक्र X-अक्ष पर लम्बवत् होता है। *[CBSE (OD), 2013]*

**(iii) इकाई लोचदार माँग (Unitary Elastic Demand)** ($e = 1$)–माँग की उस स्थिति को कहते हैं जिसमें कीमत में होने वाले प्रतिशत परिवर्तन के बराबर माँग में प्रतिशत परिवर्तन होता है। जब माँग वक्र (Rectangular Hyperbola) होता है, तब माँग वक्र के सभी बिन्दुओं पर माँग की लोच इकाई के बराबर होती है।

**(iv) इकाई से अधिक लोचदार माँग (Greater than Unitary Elastic Demand)** ($e > 1$)–माँग की उस स्थिति को कहते हैं जिसमें कीमत में होने वाले एक निश्चित प्रतिशत परिवर्तन के परिणामस्वरूप माँग में अपेक्षाकृत अधिक प्रतिशत परिवर्तन होता है।

**(v) इकाई से कम लोचदार माँग (Less than Unitary Elastic Demand)** ($e < 1$)–माँग की उस स्थिति को कहते हैं जिसमें कीमत में होने वाले एक निश्चित प्रतिशत परिवर्तन के कारण माँग में अपेक्षाकृत कम प्रतिशत परिवर्तन होता है। *(CBSE, 2013)*

**39. माँग की कीमत लोच का माप (Measurement of Price Elasticity of Demand)**–(i) कुल व्यय रीति, (ii) प्रतिशत या आनुपातिक रीति, (iii) बिन्दु रीति।

**कुल व्यय रीति (Total Expenditure Method)**–

(1) माँग की कीमत लोच इकाई ($e = 1$) तब होती है जब वस्तु की कीमत घटने या बढ़ने पर उस पर किए जाने वाला कुल व्यय पूर्ववत् ही रहता है।

(2) माँग की कीमत लोच इकाई से अधिक ($e > 1$) तब होती है जब वस्तु की कीमत के घटने पर कुल व्यय बढ़ जाये अथवा वस्तु की कीमत के बढ़ने पर कुल व्यय घट जाये। अत: वस्तु की कीमत तथा उस पर किए जाने वाले कुल व्यय में विपरीत सम्बन्ध होने पर माँग की लोच इकाई से अधिक होती है।

(3) माँग की कीमत लोच इकाई से कम ($e < 1$) तब होती है जब वस्तु की कीमत के बढ़ने पर कुल व्यय बढ़ जाये अथवा वस्तु की कीमत के घटने पर कुल व्यय घट जाये। अत: वस्तु की कीमत तथा उस पर किए गए कुल व्यय में धनात्मक सम्बन्ध होने पर माँग की लोच इकाई से कम होती है।

**प्रतिशत या आनुपातिक रीति (Percentage or Proportionate Method)**–

$$e_p = \frac{\text{माँग का आनुपातिक परिवर्तन}}{\text{कीमत का आनुपातिक परिवर्तन}}$$

$$= -\frac{\Delta Q/Q}{\Delta P/P}$$

**ज्यामितीय या बिन्दु रीति (Geometric or Point Method)**–

$$\text{माँग की लोच} = \frac{\text{माँग वक्र पर बिन्दु का निचला भाग}}{\text{माँग वक्र पर बिन्दु का ऊपर का भाग}}$$

$$= \frac{\text{Lower Segment}}{\text{Upper Segment}}$$

**40. माँग की लोच को प्रभावित करने वाले तत्व (Factors Affecting Elasticity of Demand)**–(i) वस्तु की प्रकृति, (ii) स्थानापन्न वस्तुएँ, (iii) वस्तु के वैकल्पिक उपयोग, (iv) उपभोग स्थगन, (v) व्यय की राशि, (vi) आय-स्तर, (vii) कीमत-स्तर, (viii) समय अवधि, (ix) वस्तुओं की पूरकता, (x) स्वभाव एवं आदत।

**41. अधिक चपटा माँग वक्र अधिक लोचदार होता है (Flatter the Demand Curve, Greater the Elasticity)**–यदि दो माँग वक्र एक-दूसरे को काटते हैं तो कटाव बिन्दु पर जो वक्र जितना अधिक चपटा होगा, उतना ही अधिक वह लोचशील होगा।

Scanned with CamScanner